Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

भारत लोग और अर्थव्यवस्था

कक्षा - 12

अध्याय - 3

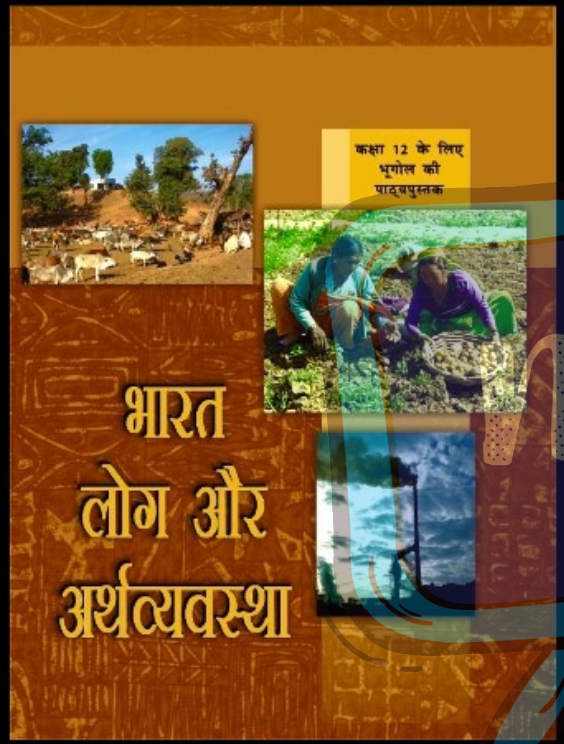
भूसंसाधन तथा कृषि

भाग - 2

पंकज वैष्णव

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



विषय-सूची

	आमुख	iii
	पाठ्यपुस्तकों में पाठ्य सामग्री का पुनर्संयोजन	v
	इकाई I	
1.	जनसंख्या : वितरण, घनत्व, वृद्धि और संघटन	1-14
	इकाई II	
2.	मानव बस्तियाँ	15-20
	इकाई III	
3.	भूसंसाधन तथा कृषि	21-40
4.	जल-संसाधन	41-52
5.	खनिज तथा ऊर्जा संसाधन	53-64
6.	भारत के संदर्भ में नियोजन और सततपोषणीय विकास	65-73
	इकाई IV	
7.	परिवहन तथा संचार	74-83
8.	अंतर्राष्ट्रीय व्यापार	84-92
	इकाई V	
9.	भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में चयनित कुछ मुद्दे एवं समस्याएँ	93-103
	परिशिष्ट	104-111
	शब्दावली	112
	संदर्भ पुस्तकें	113-114

© NCERT not to be republished

C-2 : प्रवास - प्रकार, कारण, परिणाम ✗
C-3 : मानव विकास ✗
C-8 : निर्माण उद्योग ✗

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

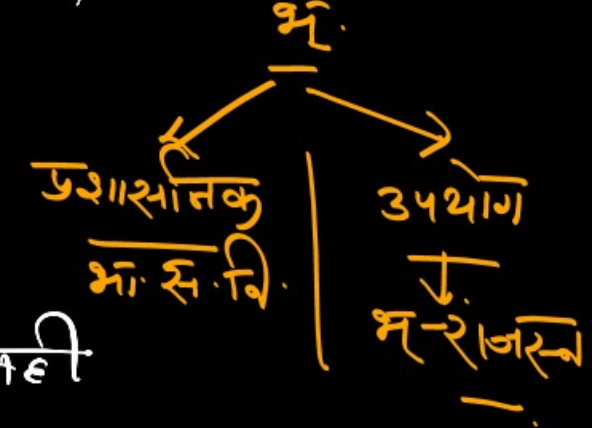
Q:- भारत में भूमि - उपयोग संबंधी अभिलेख _____ रखता है।

(a) भारतीय सर्वेक्षण विभाग

(b) भू - राजस्व विभाग

(c) वन विभाग

(d) उपयुक्त में से कोई नहीं



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q:- वनों के अधीन क्षेत्र के अंतर्गत निम्न में से कौन-कौन से क्षेत्र आते हैं ?

(a) वर्गीकृत वन क्षेत्र
(b) वनों के अंतर्गत वास्तविक क्षेत्र
(c) a तथा b दोनों ✓
(d) न तो a तथा न ही b

वर्गीकृत →
वास्तविक →

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

Q:- वह भूमि जो 1 वर्ष या कम समय तक परती (कृषि रहित) हो, क्या कहलाती है?

(a) वर्तमान परती भूमि

(b) पुरातन परती भूमि

(c) निबल बोया गया क्षेत्र

(d) सकल बोया गया क्षेत्र

1 या उससे कम समय
वर्तमान

1-5
पुरातन

>5
1

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q :- ["कृषि योग्य व्यर्थ भूमि" वह भूमि है जो पिछले _____ वर्षों तक कृषिरहित है :-

(a) 1 या 1 से कम

(b) 1 से 5

(c) 5 या 5 से अधिक

(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

वर्तमान – 1 या 1 से कम

पुरानत – 1 – 5

कु-व्यर्थ – 5 या 5 से अधिक

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q :- भू-उपयोग को प्रभावित करने वाले अर्थव्यवस्था के कारक है :-

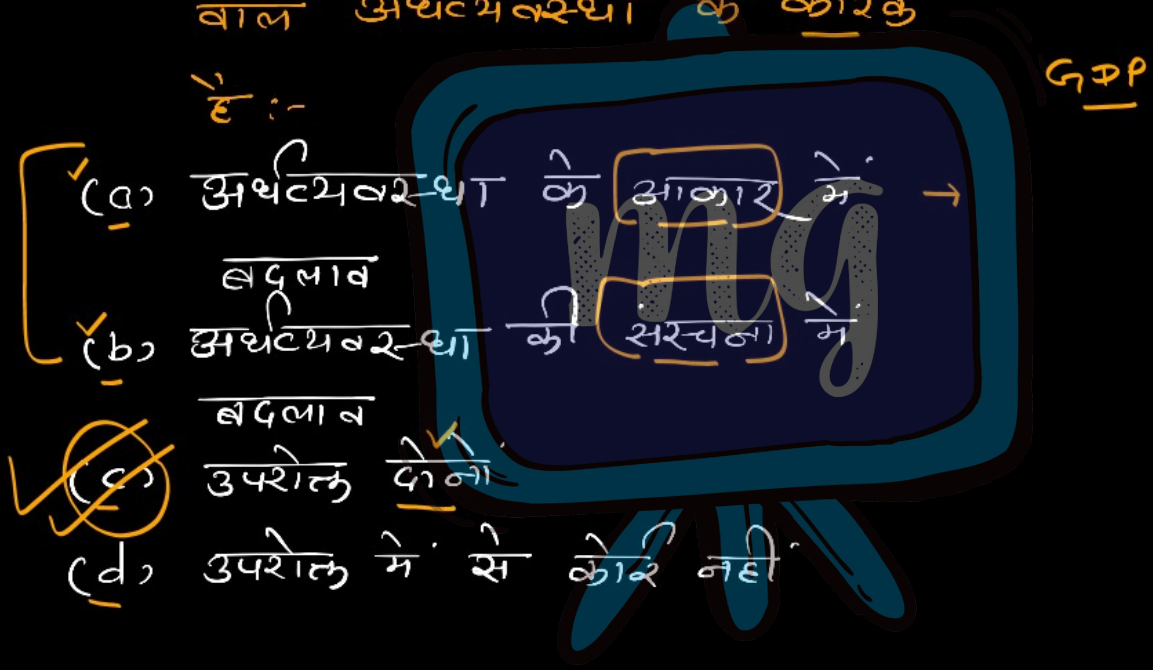
GDP

(a) अर्थव्यवस्था के आकार में → बदलाव

(b) अर्थव्यवस्था की संरचना में बदलाव

(c) उपरोक्त दोनों

(d) उपरोक्त में से कोई नहीं



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

भूसंसाधन

- भारत की प्रशासकीय ईकाइयों के भौगोलिक क्षेत्र की सही जानकारी भारतीय सर्वेक्षण विभाग देता है यह स्थायी है।
- भारत में भूमि-उपयोग संबंधी अभिलेख भू-राजस्व विभाग रखता है। यह परिवर्तनशील है।
- भारत में भूराजस्व विभाग द्वारा भूमि उपयोग को निम्नलिखित 9 वर्गों में रखा गया है :-

1. वनों के अधीन क्षेत्र (Forest Area) : वर्गीकृत वन क्षेत्र (जहाँ वन विकसित हो सकते हैं।) तथा वनों के अंतर्गत वास्तविक क्षेत्र

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

2. गैर-कृषि कार्यों में प्रयुक्त भूमि : बस्तियां, अवसंरचना (सड़के, नहर) उद्योग, आदि द्वितीयक व तृतीयक कार्यकलाप शामिल किये गये हैं।

3. बंजर व व्यर्थ भूमि : बंजर पहाड़ी क्षेत्र, मरूस्थल, आदि।

4. स्थायी चरागाह : ग्राम पंचायत या सरकार के अधीन सामुदायिक भूमि।

5. विविध तरू फसलों व उपवनों के अंतर्गत क्षेत्र : जिनमें निजी स्वामित्व के उद्यान व फलादार वृक्ष लगाये गये हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

सकल

6. कृषि योग्य व्यर्थ भूमि: पिछले 5 वर्षों से अधिक समय तक परती भूमि हो। तकनीकी मदद से कृषि योग्य बनाया जा सकता है।

7. वर्तमान परती भूमि : भूमि जो 1 वर्ष या कम समय तक परती (कृषि रहित) हो। इससे भूमि की उर्वरता बनाये रखने में सहायता मिलती है।

8. पुरातन परती भूमि : 1 वर्ष से 5 वर्ष के मध्य परती भूमि को इसमें शामिल करते हैं।

9. निवल बोया क्षेत्र : वह भूमि जिस पर वास्तविक रूप से कृषि की जाती है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

भारत में भू-उपयोग परिवर्तन

- किसी क्षेत्र में भू-उपयोग, अधिकतर वहाँ की आर्थिक क्रियाओं की प्रकृति पर निर्भर है-
- भू-उपयोग को प्रभावित करने वाले अर्थव्यवस्था के कारक निम्न हैं-

1. अर्थव्यवस्था के आकार में बदलाव : समय के साथ-साथ भूमि पर दबाव बढ़ता है तथा सीमांत भूमि को भी प्रयोग में लाया जाता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

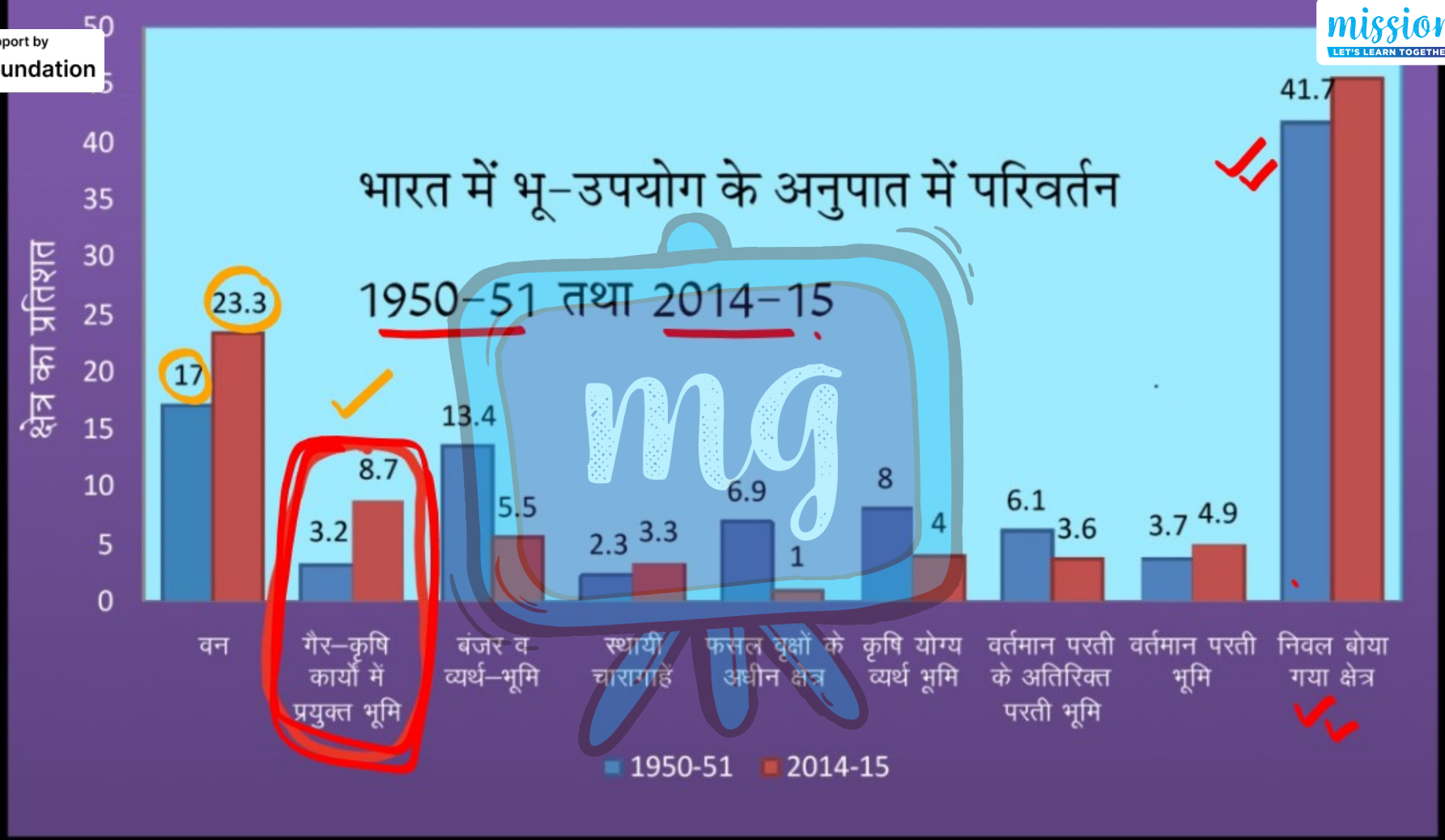
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

2. अर्थव्यवस्था की संरचना में बदलाव : द्वितीयक व तृतीयक सेक्टर में प्राथमिक सेक्टर की अपेक्षा तीव्रता से वृद्धि होती है। विशेषरूप से नगरों के समीपवर्ती क्षेत्रों में कृषि भूमि को अन्य क्रियाओं के उपयोग के लिए लाया जाता है।

3. हालांकि कृषि क्रियाकलापों का अर्थव्यवस्था में योगदान कम होता है लेकिन भूमि पर कृषि क्रियाकलापों का दबाव कम नहीं (जनसंख्या में वृद्धि तथा खाद्य आदतों में बदलाव के कारण)

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

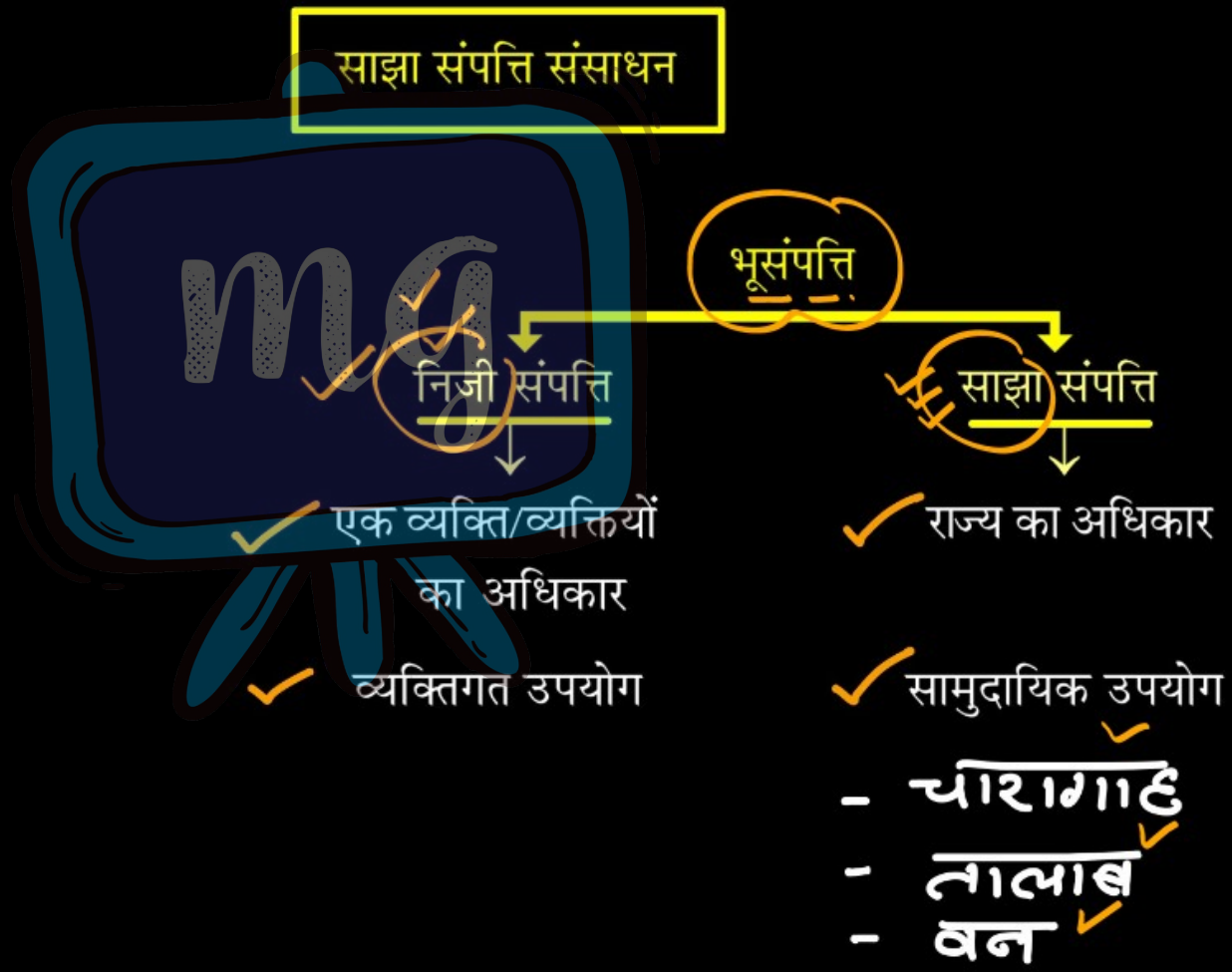


स्वतंत्रता पश्चात भारत की अर्थव्यवस्था में बदलाव आने के कारण भू-उपयोग परिवर्तन भी प्रभावित हुआ है।

1. देश में वन क्षेत्र में वृद्धि सीमांकन के कारण हुई है न कि देश में वास्तविक वन आच्छादित क्षेत्र के कारण।
2. गैर-कृषि कार्यों में प्रयुक्त क्षेत्र में वृद्धि के कारण सेक्टर परिवर्तन तथा नगरों का विकास है।
3. वर्तमान परती भूमि में वृद्धि का कारण वर्षा की अनियमितता तथा फसल चक्र है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



आजीविका संपत्ति

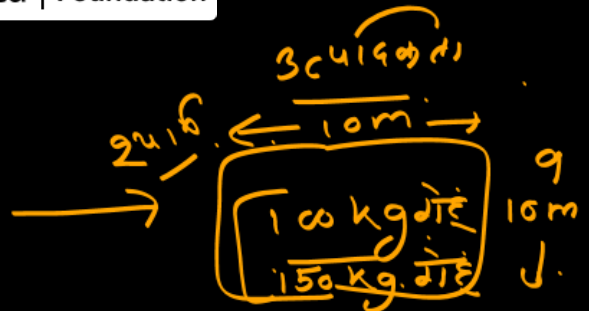
वन

ग्रामीण क्षेत्रों में भूमिहीन छोटे कृषक, मजदूर, महिलाओं के लिए विशेष महत्व

चारा, ईंधन, लकड़ी अन्य वन उत्पाद प्राप्त होते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



भारत में कृषि भू-उपयोग

- भूमि उपयोग का महत्व प्राथमिक क्रियाकलापों में संलग्न लोगों के लिए अधिक होता है।
- भूमि कृषि में आधारभूत कारक है।
- ग्रामीण क्षेत्रों का आर्थिक एवं सामाजिक स्वरूप मृदा से जुड़ा होता है।
- निवल बोये गये क्षेत्र की संभावना सीमित है।

भूमि बचत प्रौद्योगिकी

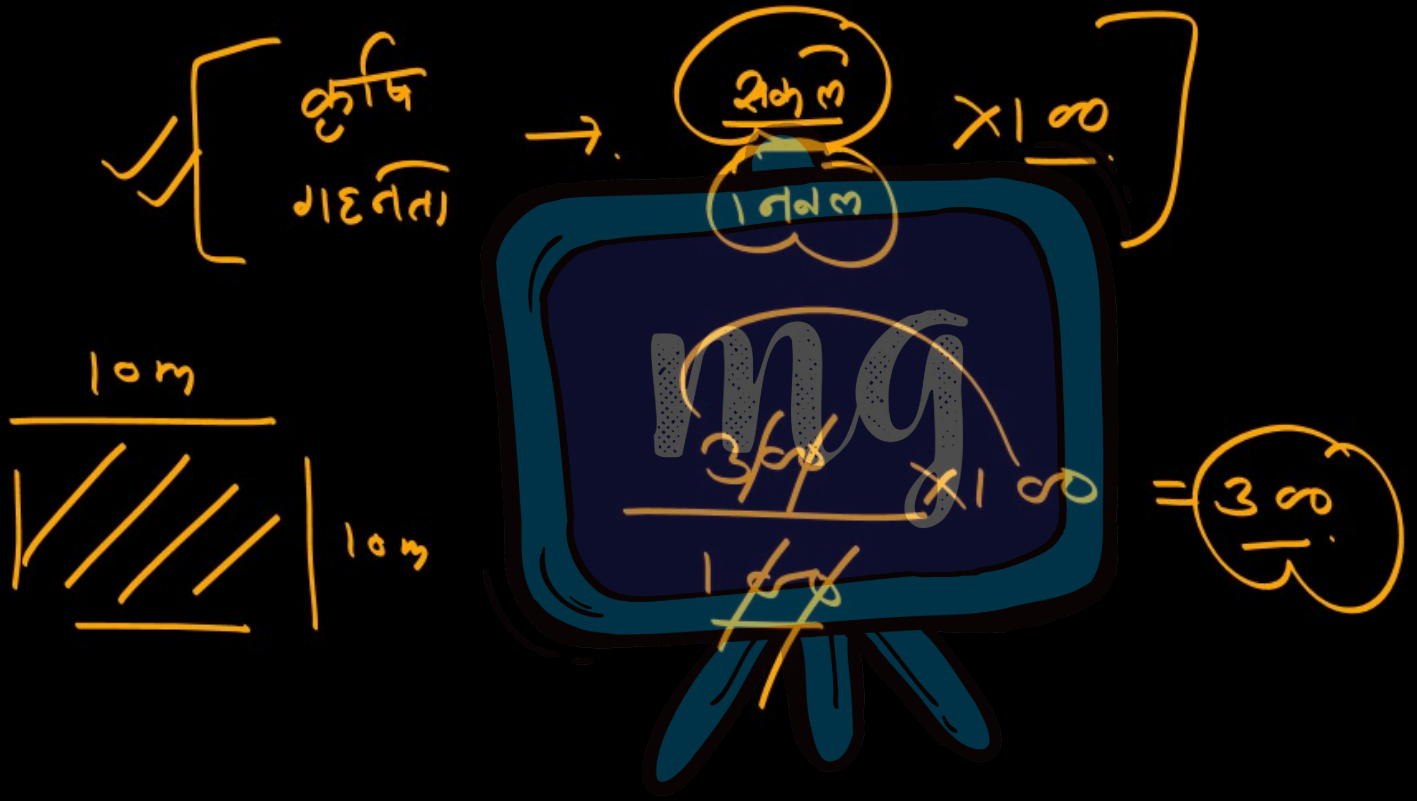
उतपादकता बढ़ाना

कृषि गहनता

$$\text{कृषि गहनता} = \frac{\text{सकल बोया गया क्षेत्र}}{\text{निवल बोया गया क्षेत्र}} \times 100$$

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

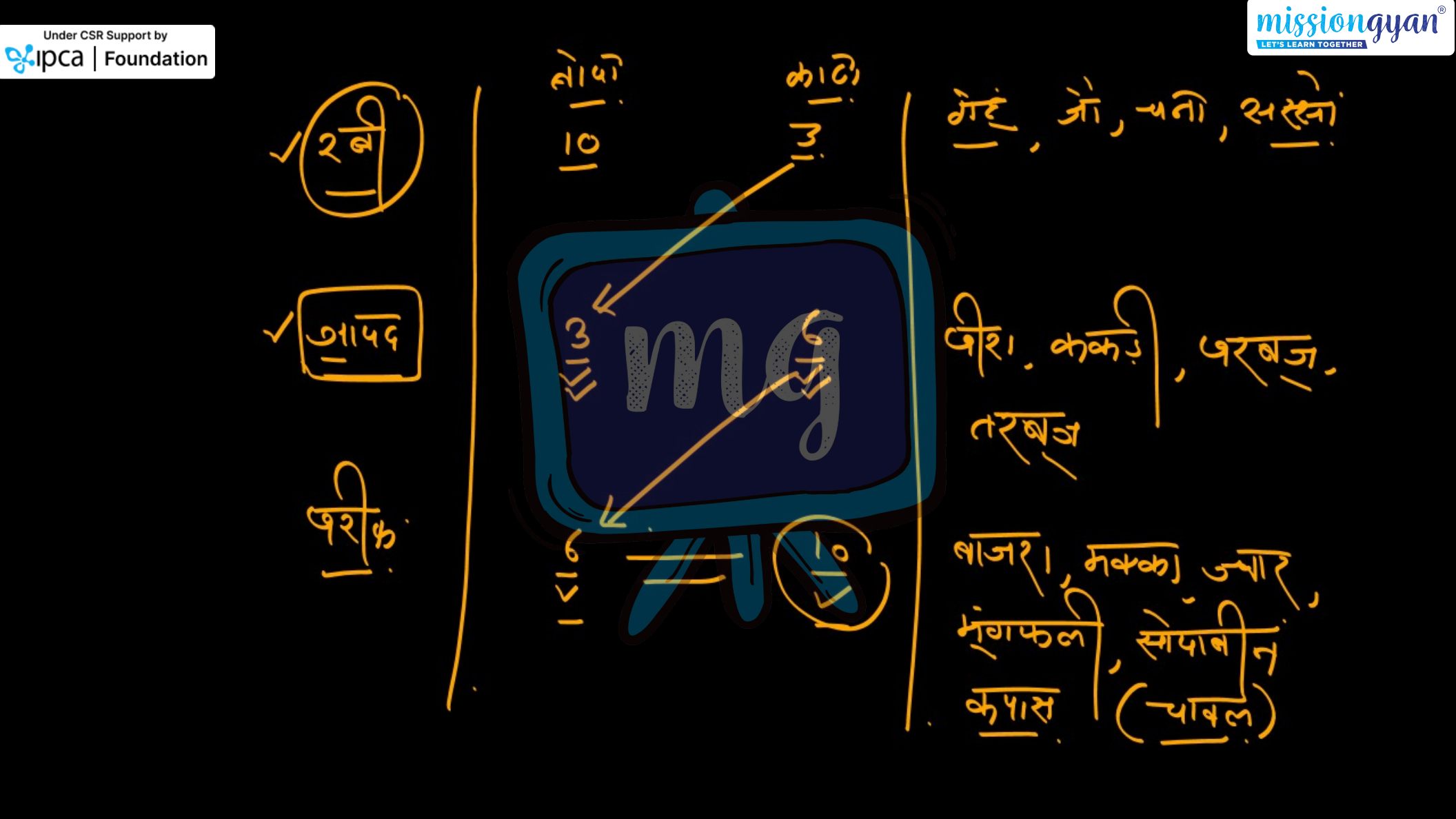
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

भारत में फसल ऋतुएं

खरीफ	रबी	जायद
उष्ण कटिबंधी फसल द.प. मानसून के समय (जून–जुलाई से अक्टूबर –नवंबर तक) चावल, कपास, जूट, ज्वार, बाजरा, अरहर आदि	शरद ऋतु में अक्टूबर–नवंबर से प्रारम्भ होकर मार्च–अप्रैल में समाप्त। शीतोष्ण/उपोष्ण कटिबंधीय फसल जैसे– गेहूँ, चना तथा सरसों आदि	अल्पकालिक ग्रीष्मकालीन फसल रबी की कटाई के पश्चात (अप्रैल से जून) केवल सिंचित क्षेत्र में तरबूज, खीरा, ककड़ी सब्जियाँ, चारे की फसल।

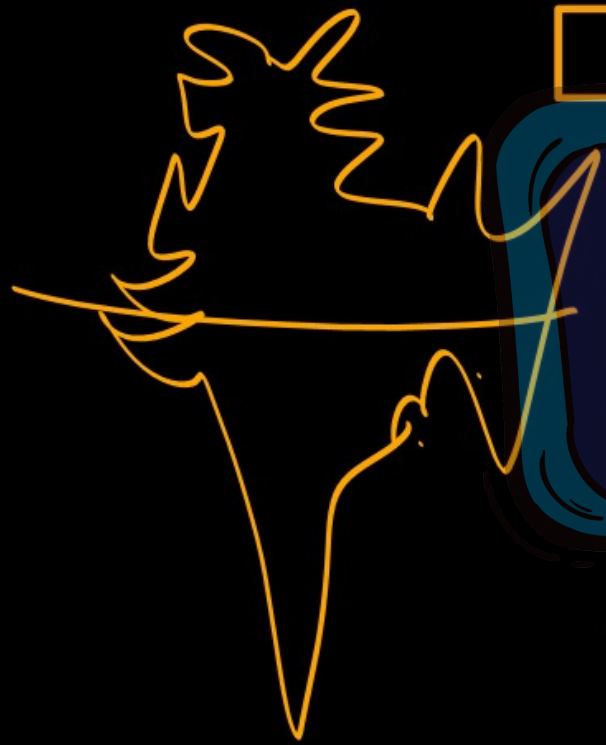
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



भारतीय कृषि ऋतु

कृषि ऋतु	प्रमुख फसलें	
	उत्तरी भारत राज्य	दक्षिणी राज्य
खरीफ (जून से सितंबर)	चावल, कपास, बाजरा, मक्का, ज्वार, अरहर (तुर)	चावल, मक्का, रागी, ज्वार तथा मूँगफली
रबी (अक्टूबर से मार्च)	गेहूँ, चना, तोरई, सरसों, जौ	चावल, मक्का, रागी, मूँगफली
जायद (अप्रैल से जून)	वनस्पति, सब्जियाँ, फल, चारा फसलें	चावल, सब्जियाँ, चारा फसलें